पठन कौशल विकास के लिए पुस्तकालय संवर्धन में विद्यालय प्रमुख की भूमिका - राजस्थान के संदर्भ में

लेखक :डॉ धीरेन्द्र कुमार रांकावत

राजस्थान स्कूल लीडरशिप अकादमी

सीमेट, जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना :-

पठन कौशल विकास विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन और उनके समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस कौशल का विकास न केवल ज्ञान की प्राप्ति में सहायक होता है, बल्कि यह विचार-विमर्श, सृजनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति के कौशलों को भी प्रोत्साहित करता है। इस प्रक्रिया में, पुस्तकालय एक केंद्रीय भूमिका निभाता है, जो विविध पुस्तकों, संसाधनों और शैक्षिक सामग्री के माध्यम से विद्यार्थियों के पठन कौशल के विकास में सहायक होता है। इस संदर्भ में, विद्यालय प्रमुख की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। विद्यालय प्रमुख, पुस्तकालय संवर्धन और पठन कौशल विकास की प्रक्रिया में एक नेतृत्वकारी भूमिका निभा सकते हैं। वे पुस्तकालय के संसाधनों को अद्यतन रखने, नवीन व उपयोगी सामग्री का संग्रह करने और विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के बीच पठन संस्कृति को प्रोत्साहित करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं। पठन कौशल किसी भी विद्यार्थी की शैक्षणिक सफलता के लिए मौलिक आधार माने जाते हैं। ये कौशल न केवल ज्ञान के विस्तार में सहायक होते हैं, बल्कि व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सफलता के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। इस संदर्भ में, पुस्तकालय संवर्धन का उद्देश्य पठन सामग्री की उपलब्धता और विविधता को बढ़ाना है, जिससे विद्यार्थियों के पठन कौशल में सुधार हो सके।

यहाँ विद्यालय प्रमुख की पुस्तकालय संवर्धन में भूमिका और उनके द्वारा पठन कौशल विकास के लिए किए जा सकने वाले विभिन्न प्रयासों को उल्लेखित करेंगे। जब हम पुस्तकालय सम्बन्धी इतिहास का अध्ययन करते है तो पाते है कि भारत में पुस्तकालय संस्कृति के सबसे पुराने उदाहरण नालंदा, तक्षशिला, तंजौर या कांचीपुरम जैसे भव्य पुस्तकालयों के हैं ॥1 जब अंग्रेज भारत आए तब भी पुस्तकालय की मौजूदगी थी पर आम जनता के लिए उपलब्ध नहीं थी 1 आधुनिक पुस्तकालयों के उदय से संबंधित शोध बताते हैं कि सन 1835 में स्थापित कोलकाता लाइब्रेरी को 1902 में इंपीरियल लाइब्रेरी का दर्जा दिया गया| बड़ोदरा के महाराजा शिवाजी गायकवाड (तृतीय) ने भी सार्वजनिक पुस्तकालय की व्यवस्था की। | सन 1910 तक अपने राज्य की सभी गांव और शहरों में पुस्तकालय स्थापित करने की योजना भी उन्होंने लागू की |

सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर (तमिलनाडु)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के तहत धारा प्रवाह पठन कौशल विकास एक ऐसा महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिससे बालकों की पढ़ने की गति, समझ और विश्लेषण क्षमता में निरंतर सुधार होता है। यह कौशल न केवल शैक्षणिक सफलता के लिए अपरिहार्य है, बल्कि व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में भी इसका बड़ा महत्व है। पुस्तकालय, धारा प्रवाह पठन कौशल में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे न केवल ज्ञान के भंडार होते हैं, बल्कि पढ़ने के लिए एक अनुकूल वातावरण भी प्रदान करते हैं जो धारा प्रवाह पठन कौशल के विकास के लिए आवश्यक है। पुस्तकालय का संवर्धन इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। क्योंकि पुस्तकालय पठन सामग्री की विविधता, पढ़ने की आदतों में सुधार, एवं उनके ज्ञान का विस्तार होता है और उनके विचार विमर्श की गुणवत्ता में वृद्धि करता है। जिससे बालकों को विभिन्न विषयों और शैलियों पर आधारित पुस्तकों तक पहुँच मिलती है, जो उनकी रुचि और पठन क्षमता को बढ़ावा देती है।

1.1 **शिक्षा नीतियों में पुस्तकालय** :- 1951 में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना न सिर्फ भारत, बल्कि एशिया भर का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। 1954 में सिन्हा कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार देश में 'कुल 32000 (बत्तीस हज़ार) पुस्तकालय थे और उनमें किताबों की संख्या 7000000 (सत्तर लाख) के आसपास थी, यानी प्रति पुस्तकालय लगभग 220 किताबें। किताबों की इस संख्या को देख कर एक बार फिर कहा जा सकता है कि ज्यादातर पुस्तकालय कुल मिलाकर वाचनालय से ज्यादा नहीं थे। आजादी के पश्चात पुस्तकालयों के पक्ष में कई सारी नीतियों में भी बात की गई, जिसमें सबसे प्रमुख रही मुदालिआर आयोग की रिपोर्ट (1952)। मुदालिभार आयोग की रिपोर्ट में स्कूलों में पुस्तकालय के होने से सम्बंधित कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर बात रखी गई - एक पुस्तकालय कैसा हो, पुस्तकालय अध्यक्ष कैसा हो, किताबों का संग्रह कैसा हो, किस तरह का व्यवस्थात्मक सहयोग हो। आयोग की रिपोर्ट के कुछ मुख्य पहलू यहाँ प्रस्तुत हैं -

- पुस्तकालय स्कूल का सबसे आकर्षक और आमंत्रित करने वाला स्थान हो, किताबें खुले अलमारियों में हों और विद्यार्थियों को ऐसा महसूस हो कि यह जगह उनकी अपनी है।
- बच्चों की ज़रूरत, उनकी रुचियों के अनुसार, गुणवत्तापूर्ण किताबों का चयन, संग्रह के लिए हो और उसका नियमित रूप से नवीनीकरण भी किया जाए।
- योग्य, प्रशिक्षित, कल्पनाशील और व्यवस्थित पुस्तकालय प्रभारी हो। बच्चों का किताबों से रिश्ता बनाने के लिए, इनकी स्वयं एक बौद्धिक और साहित्यिक उत्तेजना हो।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में, 'पुस्तकालय प्रबंधन और नियोजन' प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा हो।
- केन्द्रीय पुस्तकालयों के अलावा स्कूलों में कक्षा-पुस्तकालयों की भी मुहिम हो।
- शिक्षण पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित न रहे बल्कि शिक्षण पुस्तकालयों के माध्यम से भी किया जाए।
- स्कूल में सभी शिक्षक पुस्तकालयों का प्रयोग करें। वे बच्चों की रुचियों को समझने और पुस्तकालय से उन्हें जोड़ने का प्रयास भी करें।
- बच्चों के साथ पढ़ी गई पुस्तकों पर एक डायरी रखना, समीक्षा करना और उन पर बातचीत व गतिविधियों के मौके उपलब्ध हों।
- पुस्तकालय स्थानीय समुदायों के लिए भी खुला रहे, खासकर छुट्टियों में।
- सार्वजनिक पुस्तकालयों में एक खंड बच्चों के लिए होना चाहिए।

वर्ष	प्रमुख आयोग / नीति / दस्तावेज / प्रयास	मुख्य बिंदु
1986	राष्ट्रीय शिक्षा नीति	समग्र विकास पर विशेष ध्यान और सभी की पुस्तकालय तक पहुंच हो | पुस्तकालयों के सुधार और स्थापना का अभियान संचालित हो
1990	आचार्य राममूर्ति कमेटी	पाठ्य पुस्तकों पर निर्भरता कम करने की सिफारिश और पुस्तकालयों द्वारा शिक्षा में गुणवत्ता बढ़ाने की बात |
2005	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा	स्कूल में पुस्तकालय को एक जरूरी घटक माना और उसके द्वारा शिक्षा में नवीनीकरण की बात | पुस्तकालय में पढ़ने का समय देने की बात और पुस्तके घर ले जाने की सिफारिश |

2009	शिक्षा का अधिकार	प्रत्येक विद्यालय में एक पुस्तकालय होगा, जिसमें समाचार पत्र, पत्रिका एवं सभी संबंधित विषयों की पुस्तकों के साथ-साथ कहानी की पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएगी |
2014	पढ़े भारत, बढ़े भारत	बच्चों का किताबों के साथ सार्थक एवं सामाजिक रूप से संबंध बने व अन्य अवसर हो जिसमें पढ़ने-लिखने के लिए सक्रिय एवं अर्थपूर्ण ढंग से किताबों पर आधारित गतिविधियां हो |
2018	समग्र शिक्षा अभियान	"पढ़े भारत, बढ़े भारत" को सहयोग देते हुए 5000 से 20000 राशि की लाइब्रेरी ग्रांट | संग्रह विकसित करने और लाइब्रेरी से जुड़ाव बढ़ाने पर जोर |
2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति	स्कूल और सार्वजनिक पुस्तकालयों को बढ़ावा | पढ़ने व संवाद करने की संस्कृति को विकसित करने की जरूरत | पुस्तकालय में क्षेत्रीय भाषाओं में बच्चों की किताबें शामिल हो | शिक्षक सक्रिय रूप से बच्चों को किताबें पढ़ने और उन्हें घर ले जाने के लिए प्रोत्साहित करें | पुस्तकालय के आसपास गतिविधियां जैसे - कहानी, रंगमंच, समूह में पढ़ना -लिखना और बच्चों द्वारा लिखी गई सामग्री व कला का प्रदर्शन |

❖ आपके अनुसार कौनसे प्रमुख आयोग / नीति / दस्तावेज / प्रयास आपको अपने स्कूलों में देखने को मिलते है ?

1.2 **पुस्तकालय की आवश्यकता** :- 2007 में शिक्षाविद कृष्ण कुमार जी ने पुस्तक संस्कृति की ज़रूरत पर दिए एक भाषण में इस ही बात पर जोर देते हुए कहा कि "यदि इतने प्रयासों और प्रावधानों के बाद भी हमारी स्कूली व्यवस्था में पुस्तकालय नहीं है, तो हो सकता है कि हमारी व्यवस्था को दरअसल लाइब्रेरी की ज़रूरत नहीं है"। पाठ्यपुस्तक पर टिकी हमारी व्यवस्था, जिसमें परीक्षा सर्वप्रथम है, वह शायद पुस्तकालय का मोल नहीं समझ पा रही। पाठ्यपुस्तक पढ़कर ही जब परीक्षा की सीढ़ी पार हो रही है और बच्चे स्कूली शिक्षा पूरी कर पा रहे हैं तो इस व्यवस्था में पुस्तकालय की भूमिका क्या होगी ? यहाँ यह सवाल उठाना ज़रूरी है क्या शिक्षा की हमारी परिकल्पना बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने और परीक्षा पूर्ण करने तक ही सीमित है? या फिर उनके एक ऐसे नागरिक के रूप में विकसित होने की अपेक्षा है, जो पढ़ने का अपने जीवन के साथ सम्बन्ध देख पाए, उसका प्रभावी इस्तेमाल कर पाए और जीवन में नए अनुभव अर्जित करते हुए अपने लिए उनके नए मायने बना पाए। यदि आप दूसरे वक्तव्य से इत्तेफ़ाक रखते हैं तब हमें पुस्तकालयों की ज़रूरत है। पुस्तकालय के उद्देश्य, शिक्षा के उद्देश्यों से कोई अलग नहीं हैं, बल्कि इसके पूरक हैं।

शिक्षाविद गिजुभाई ने पुस्तकालय को एक शिक्षा पद्धति के रूप में देखा जिसे उन्होंने पुस्तकालय पद्धति कहा। विद्यालय / कक्षा कक्ष में लोग जानकारी के साधन भर पाते है जबकि पुस्तकालय में जाकर वो

स्वयं ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। एक अच्छा पुस्तकालय कई शिक्षकों की कमी पूरी करता है। शिक्षक की तरह पुस्तकालय, विद्यार्थियों को न तो धमकाता है, न उन्हें अनुशासित करने की कोशिश करता है, न मिथ्या स्पर्धा में प्रवेश कराता है, और न परीक्षा का भय ही उत्पन्न करता है। फिर भी वह पल-पल में अपने पास आने वालों को प्रेम-पूर्वक, विनय-पूर्वक और रूचि पूर्वक पढाता रहता है।

गिजुभाई ने लगभग मुदालिभर आयोग की बातों को ही अलग ढंग से कहा है चाहे वो बच्चों की रुचियों के बारे में हो, अच्छी पुस्तकों के चयन के बारे में, पुस्तकालय में उनको एक खुला माहौल देने के बारे में हो या शिक्षक के एक अच्छे ग्रंथपाल की भूमिका के होने में। उनका मानना था कि **पुस्तकालय की अपने आप में एक शिक्षा पद्धति है ।**

" बच्चों को जब अपने स्तर पर पढ़ने और अपने साथियों के साथ बातचीत करने का मौका मिलता है तो शब्दों का भण्डार बढ़ता है, वे कई सारे नए शब्दों को नए-नए सन्दर्भों में पढ़ते हैं व उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करते हैं। साथ ही वे जितना ज़्यादा पढ़ते हैं उतनी ही उनकी समझ बढ़ती है जिससे उनको अपनी पाठ्यपुस्तकों को समझने में भी मदद मिलती है। जब बच्चे स्वयं अपने हिसाब से पढ़ते हैं तो उन्हें बार-बार पढने पर कोई रोकता नहीं है, उनकी गलतियों पर उन्हें कोई टोकता नहीं है। इसलिए वे अपनी मन-पसंद चीज़ों को पढ़ने का आनंद ले सकते हैं। "

- क्या पुस्तकालय आपकी स्कूली शिक्षा का अभिन्न अंग रहा है ? यदि हाँ तो आप द्वारा इसका सदुपयोग कैसे किया गया ? एवं आपकी रूचि किस प्रकार की पुस्तकों के अध्ययन की रही है ?

1.3 विद्यालयों में पुस्तकालय की परिकल्पना :- विचारकों, शिक्षाविदों और नीतियों की पुस्तकालय परिकल्पना को वास्तव में ज़मीनी स्तर पर, हर स्कूल में कैसे लाया जाए यह एक चुनौती है। यह कार्य तब तक संभव नहीं है जब तक यह परिकल्पना हमारे रोज़मर्रा के काम में गहन रूप से न जुड़ जाए। एक ऐसी परिकल्पना जो हमारे सन्दर्भ और खासकर हमारे बच्चों को केंद्र में रखते हुए विकसित हो। पुस्तकालय एक जीवंत स्थान हो और ये जीवन्तता सिर्फ सुन्दर कमरे, ढेर सारी किताबों, कुर्सी-टेबल या साज-सज्जा से नहीं आती है। जीवन्तता पाठकों से आती है, पुस्तकालय में उनके जुडाव और उसके माहौल से बनती है। तभी वहां बच्चा एक पाठक के रूप में विकसित हो सकता है।

पुस्तकालय की परिकल्पना उसके पाठकों और लाइब्रेरियन के बिना अधूरी है। एक जीवंत पुस्तकालय के पुस्तकालय अध्यक्ष के लिए जरूरी है कि उसे साहित्य की अच्छी समझ हो। वह इंसान के भावनात्मक और बौद्धिक विकास में साहित्य की भूमिका को समझता हो। साथ ही उसमें पाठकों को किताबों से जोड़ने की क्षमता भी हो।

लाइब्रेरियन सुजाता नोरोन्हा', अपने लेख 'स्कूलों और समुदायों में पुस्तकालय कार्यक्रम क्यों?' में, जीवंत पुस्तकालय के कुछ खास पहलुओं की सिफारिश करती हैं -

- पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है जहाँ आश्चर्य, कौतुहल, सीखने का रोमांच, सक्रियता, बातचीत और बहस भी हो सकती है।
- पुस्तकालय एक व्यक्ति द्वारा संचालित प्रोजेक्ट न रहकर, शिक्षकों, बच्चों और समुदाय की भागीदारी से चलने वाला स्थान हो।
- पुस्तकालय के संग्रह में एक विविधिता हो जिसमें पाठकों की रुचि विकसित करने के विचार से पुस्तकों का चयन किया गया हो।
- पाठकों और पुस्तकों के बीच सम्बन्ध विकसित करने के प्रयास - किताबों को इस तरह प्रस्तुत किया जाए कि उसमे जुडाव, दिलचस्पी, आकर्षण, उत्प्रेरणा, रोमांच, चिंतन, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और आनंद की गुंजाइश बने।
- शिक्षकों का भी किताबों से जुडाव हो, दिलचस्पी हो या कम-से-कम इसकी संभावना हो क्योंकि पुस्तकालय की सफलता पढ़ने वालों की उर्जा से बनती है।

मशहूर किताब '**द नेम ऑफ़ द रोज़**' में लेखक उन्बैर्तो एको कहते हैं " **किसी किताब की अच्छी बात उसका पढ़ा जाना होता है।**" एक किताब ऐसे प्रतिबिम्बों से बनी होती है जो दूसरे प्रतिबिम्बों के बारे में बताते हैं।' किताबें उन अनुभवों की सांस्कृतिक वाहक हैं जिनको हमने महसूस किया है, जिन्हें हो सकता है कि हम महसूस करें या जिनको हम कभी-भी महसूस नहीं कर सकते। किताबें जीवन का ब्यौरा दर्ज करती हैं।

❖ पढ़ते हुए जो विचार या सवाल आ रहें है उन्हें यहाँ लिखें |

---

2. उद्देश्य -

आज के तेजी से बदलते शैक्षणिक परिवेश में, पठन कौशल का विकास छात्रों की शैक्षणिक सफलता और जीवन में आगे बढ़ने की क्षमता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालयी पुस्तकालय, अपने समृद्ध संसाधनों और सेवाओं के साथ, इस कौशल के विकास में एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। इस संदर्भ में, विद्यालयी नेतृत्व की भूमिका अपरिहार्य हो जाती है। प्रधानाचार्य, शिक्षकों, और अन्य स्कूल स्टाफ के नेतृत्व में, पुस्तकालय संवर्धन की गतिविधियां पठन कौशल के विकास को न केवल प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि छात्रों के लिए एक समृद्ध और समावेशी शैक्षिक वातावरण भी सुनिश्चित करती हैं।

नेतृत्व की गतिविधियां और नीतियां एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा दे सकती हैं जो पठन के प्रति उत्साह और जिज्ञासा को प्रज्ज्वलित करती हैं, और कैसे यह वातावरण छात्रों को उनके शैक्षणिक और व्यक्तिगत जीवन में सफल होने के लिए सशक्त बनाता है। इस दिशा में हम शैक्षणिक नेतृत्व, पुस्तकालय संसाधनों के प्रबंधन, शिक्षकों के प्रशिक्षण, और समुदाय और माता-पिता के साथ सहयोग के महत्व पर प्रकाश डालेंगे।

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में, पठन कौशल का विकास न केवल छात्रों की अकादमिक सफलता के लिए आवश्यक है, बल्कि यह उन्हें जीवन भर के लिए ज्ञान की खोज और सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाने की कुंजी भी है। पुस्तकालय, अपने संसाधनों और सेवाओं के साथ, इस मिशन में महत्वपूर्ण स्थान रखते

हैं। वे छात्रों को विविध विषयों और विचारों से परिचित कराने, पठन और शोध कौशल विकसित करने, और आलोचनात्मक सोच व समस्या समाधान की क्षमताओं को परिमार्जित करने का अवसर प्रदान करते हैं।

विद्यालयी नेतृत्व, जिसमें स्कूल के प्रधानाचार्य, विद्यालय प्रशासन, और शिक्षक शामिल हैं, के पास पुस्तकालय के संसाधनों और कार्यक्रमों को संवर्धित करने, पठन कौशल विकास के लिए एक उत्तेजक वातावरण बनाने, और छात्रों में ज्ञान की खोज के प्रति एक स्थायी उत्साह जगाने की अनूठी क्षमता होती है। विद्यालय प्रमुख की भूमिका पठन कौशल विकास के लिए पुस्तकालय संवर्धन में महत्वपूर्ण होती है।

निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं जिन्हें विद्यालय प्रमुख द्वारा ध्यान में रखा जा सकता है -

विविधता और समावेशन: पुस्तकालय में विविध और समावेशी संग्रह को सुनिश्चित करना, ताकि सभी छात्रों को उनकी रुचि और जरूरतों के अनुसार पुस्तकें और संसाधन मिल सकें।

पढ़ाई का समर्थन: शैक्षिक सामग्री और संसाधनों के माध्यम से पठन कौशल विकास के लिए अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया का समर्थन करना।

डिजिटल साक्षरता: डिजिटल संसाधनों और ई-पुस्तकों को शामिल करके डिजिटल साक्षरता और सूचना कौशल को बढ़ावा देना।

सांस्कृतिक जागरूकता और समझ: विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों और परंपराओं से संबंधित पुस्तकें और संसाधन प्रदान करके सांस्कृतिक जागरूकता और समझ को बढ़ावा देना।

आजीवन सीखने का निर्माण: पुस्तकालय के माध्यम से छात्रों में आजीवन सीखने की आदतों को विकसित करना।

व्यावसायिक विकास: शिक्षकों और पुस्तकालय स्टाफ के लिए व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का आयोजन करना, ताकि वे छात्रों की पठन कौशल विकास में बेहतर सहायता कर सकें।

बजट और संसाधन: पुस्तकालय के लिए पर्याप्त बजट और संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

समुदाय की संलग्नता: अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को पुस्तकालय की गतिविधियों और कार्यक्रमों में शामिल करके समुदाय की संलग्नता को बढ़ावा देना।

नवाचार और तकनीकी उपयोग: नवीनतम तकनीकी उपकरणों और अभ्यासों को अपनाकर पुस्तकालय के परिचालन को आधुनिक बनाना।

पढ़ने के प्रोत्साहन: पढ़ने की प्रतियोगिताओं, लेखकों के साथ सत्र, और पुस्तक मेलों का आयोजन करके पढ़ने के प्रति उत्साह और रुचि को बढ़ावा देना।

विद्यालय प्रमुख के इन उद्देश्यों और क्रियाकलापों के माध्यम से, पठन कौशल विकास के लिए पुस्तकालय को समृद्ध और प्रभावी बनाया जा सकता है।

❖ आपके अनुसार पुस्तकालय संवर्धन में विद्यालय प्रमुख के क्या उद्देश्य हो सकते है ?

---

3. पुस्तकालय संवर्धन में नेतृत्व कौशल की अवधारणा -

पुस्तकालय संवर्धन में लीडरशिप एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो न केवल पुस्तकालय के प्रबंधन और संचालन में, बल्कि इसके विकास और उसके समुदाय के साथ संबंधों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लीडरशिप द्वारा पुस्तकालय संवर्धन के कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:

1. दृष्टिकोण और लक्ष्य निर्धारण:

स्पष्ट दृष्टिकोण: एक प्रभावी लीडर पुस्तकालय के लिए एक स्पष्ट और प्रेरक दृष्टिकोण विकसित करता है, जिससे समुदाय की सेवा में सुधार हो।

लक्ष्य निर्धारण: वे व्यावहारिक लक्ष्य निर्धारित करते हैं जो पुस्तकालय की सेवाओं, संग्रह, और संसाधनों को उन्नत करने में मदद करते हैं।

2. संसाधन प्रबंधन:

बजट आवंटन: लीडर बजट का उचित आवंटन सुनिश्चित करता है ताकि पुस्तकालय की जरूरतों को पूरा किया जा सके।

संसाधन विकास: नई तकनीकों और संसाधनों का एकीकरण, जिससे पाठकों की जरूरतों को अधिक प्रभावी ढंग से पूरा किया जा सके।

3. टीम निर्माण और व्यावसायिक विकास:

सहयोगी माहौल: ऐसा माहौल बनाना जहां स्टाफ सदस्य उत्साहित हों व अपने विचारों को साझा कर सकें।

व्यावसायिक विकास: टीम के सदस्यों को उनके कौशल और ज्ञान में वृद्धि के लिए प्रशिक्षण और विकास के अवसर प्रदान करना।

4. नवाचार और अनुकूलन:

नवाचार को प्रोत्साहित करना: नई सेवाओं, प्रोग्रामों, और तकनीकों के प्रयोग को प्रोत्साहित करना।

परिवर्तन के प्रति अनुकूलन: बदलते समुदायिक जरूरतों और तकनीकी प्रगति के अनुरूप पुस्तकालय को अनुकूलित करना।

5. समुदाय के साथ जुड़ाव:

समुदायिक सहयोग: स्थानीय संस्थाओं, स्कूलों, और अन्य संगठनों के साथ साझेदारी करके पुस्तकालय की पहुंच और प्रभाव को बढ़ाना।

पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं की आवाज सुनना, पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं की प्रतिक्रिया और सुझावों को सुनना और उन्हें कार्यान्वित करना।

6. सीखने के अनुभवों का समर्थन :

पठन कौशल विकास, शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ावा देने, और आजीवन सीखने की आदतों को निर्मित करने में पुस्तकालय की भूमिका को मजबूत करना।

7. गुणवत्ता और मूल्यांकन :

पुस्तकालय सेवाओं और संग्रह की निरंतर समीक्षा और मूल्यांकन करना, ताकि उन्हें उपयोगकर्ताओं की जरूरतों के अनुसार बेहतर बनाया जा सके।

8. नैतिकता और समावेशिता :

नैतिक मानदंडों और समावेशिता के सिद्धांतों को बनाए रखते हुए पुस्तकालय की सेवाओं का प्रबंधन।

पुस्तकालय संवर्धन में लीडरशिप की अवधारणा का मतलब है कि लीडरशिप के माध्यम से पुस्तकालय और उसकी सेवाओं को कैसे संवर्धित किया जा सकता है | यह समुदाय और उपयोगकर्ताओं के साथ संबंधों को मजबूत करने, नवाचारी सेवाओं को विकसित करने, और सीखने व पठन के अनुभवों को समृद्ध करने के बारे में भी है।

- आपके अनुसार लीडरशिप में पुस्तकालय संवर्धन को लेकर कौनसे गुण होने चाहिए |

  ---

4. केस स्टडी -1

झोला पुस्तकालय

2017 में श्री बृजेश शर्मा ने जब राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, तासोल (राजसमंद) में कार्य ग्रहण किया तब पुस्तकालय को लेकर उनके सामने बहुत सी चुनौतियां थी, उन्हें पुस्तकालय के रूप में एक छोटा कक्षा मिला जिसमें भूगोल की प्रयोगशाला भी साझा रूप में संचालित थी | बहुत कम पुस्तकें, बिना साफ सफाई रंग रोशन वाला कक्ष उन्हें पुस्तकालय के रूप में विद्यालय में मिला | कार्य भार ग्रहण के समय ही उनके समक्ष चुनौतियों का अंबार सा लग गया, लेकिन उन्होंने इन सब चुनौतियों को सहजता से लेते हुए अपनी प्रधानाचार्य श्रीमती सुनीता बनिया के सहयोग से कार्य प्रारंभ किया | प्रारंभिक समय में विद्यालय में कक्ष की कमी होने के कारण उन्होंने भूगोल प्रयोगशाला के साथ ही कक्षा साझा करते हुए अपना कार्य प्रारंभ किया और पुस्तकालय को नियमित खोलना, बच्चों के पुस्तकालय कालांश नियमित करना प्रारंभ किया | धीरे-धीरे समस्त विद्यालय के कार्मिकों का सहयोग टीमवर्क के रूप में बदलता गया, जैसे-जैसे टीमवर्क प्रारंभ हुआ समुदाय भी सहयोगी बना | इसी दौरान सन 2018-19 में पुस्तकालय ग्रांट की आई राशि उनके होसलों को पंख सा लगा गयी, इसी राशी से उन्होंने पुस्तकों की संख्या में गुणात्मक रूप से वृद्धि की | लेकिन इसके तुरंत बाद ही कोरोना जैसी महामारी का आना मानो सपनों का चकनाचूर होना जैसा था लेकिन श्री बृजेश शर्मा ने इस आपदा में अवसर मानते हुए इसका पूरा लाभ उठाया, उन्होंने इस दौरान झोला पुस्तकालय प्रारंभ किया | उन्हें लगा कि जब सभी शिक्षक गृह कार्य

देने एवं जांच के लिए बच्चों के घर जा रहे हैं तो क्यों ना वह भी कुछ नया कार्य प्रारंभ करें और उन्होंने कुछ पुस्तक अपने झोले में लेकर बच्चों के घर जाने लगे वे बच्चो को अलग - अलग की तरह की पुस्तकें देते और पुन: उनसे निश्चित समय के पश्चात् वापस ।ले लेते थे, इससे बच्चों का लगाव् पुस्तकालय की तरफ बढ़ने लगा | कोरोना पश्चात विद्यालय नियमित संचालित होने पर पुस्तकालय कक्ष में बच्चे पुस्तकालय में आकर विभिन्न प्रकार की पुस्तकों को पढ़ने के साथ पुस्तकालयी गतिविधियों में भाग लेने लगे और अब विद्यालय का प्रत्येक शिक्षक एवं विद्यार्थी पुस्तकालय से पूर्ण रूप से जुड़ चुकें है | इस कार्य में वे अपने सहयोग के लिए प्रधानाचार्य, समस्त स्टाफ एवं राजस्थान पुस्तकालय संवर्धन योजना तथा टाटा ट्रस्ट CMF को धन्यवाद देते हैं| जिन्होंने हमेशा उन्हें प्रेरित किया

वीडियो लिंक - https://www.youtube.com/watch?v=qOzg0txruUg

https://youtu.be/0tQzT5xfrCM

केस स्टडी : 2

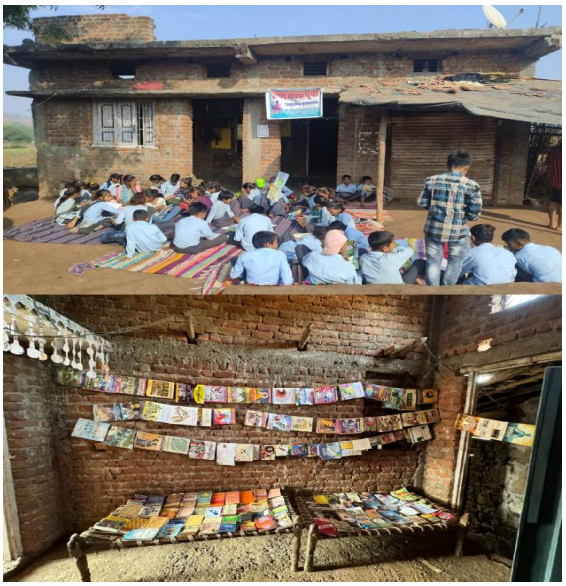

कोविड़ 19 के प्रारंभ के दिनों में जब पूरे देश में लॉक डाउन लग चुका था तो बच्चों के साथ संवाद बनाये रखने की एक बैचेनी थी। कुछ अभिभावकों के साथ फोन पर संवाद करने का प्रयास किया जाता था लेकिन गाँव की विपरित परिस्थितियों के कारण किसी का मोबाईल डिस्चार्ज था तो किसी के में टॉपअप नहीं था इसलिये बहुत कम बच्चों से बात हो पा रही थी। इसी दौरान प्रवासी मजदूरों की सर्वे हेतु ड्यूटी लगी तो गाँव में जाना था। लेकिन डर इस बात का था कि गाँव कोविड़ से सुरक्षित हैं कहीं हम वहाँ कोविड़ नहीं फैला दें।

धीरे-धीरे कोविड़ कम होने लगा, बच्चों और अभिभावकों से पूरी सुरक्षा के साथ मिलने लगे सभी पढ़ाई को लेकर चिंतित थे, तब सोचा गया कि स्कूल की पुस्तकालय की पुस्तकों को बच्चों तक पहुँचाया जाए। इसके लिये शिक्षक साथी श्री भूरालाल जी की मदद से पुस्तकों को छाँटा गया और उन्हें बच्चों के घर-घर जाकर वितरित किया गया। बच्चों से यह बात भी की गई कि दो दिन बाद पुनः दूसरी पुस्तक देकर जायेंगे यदि वे इस पुस्तक को पढ़ लें तो अपने पडौस में रहने वाले साथी के साथ बदल लें । जब पुस्तकें देकर वापस लौट रहे थे तो हमने देखा कि बच्चे घर की दीवारों पर, छत की मुंडेरों पर बैठकर बड़ी तन्मयता के साथ बैठकर पुस्तकें पढ़ रहे थे। पुस्तकों के प्रति बच्चों के लगाव को देखते हुए एक

संस्था से बात की गई और लगभग 80 पुस्तकें प्राप्त हुई। इन पुस्तकों के माध्यम से कोरोना काल में बच्चों के साथ निरंतन पढने-पढ़ाने कम जारी रखा गया। कोरोना के बाद विद्यालय नियमित प्रारंभ हुए और बच्चों के साथ पाठ्यपुस्तकों के अलावा पुस्तकालय की पुस्तकों पर भी काम किया जाने लगा |इसी दौरान इस सत्र में जुलाई माह में विद्यालय का एक पूर्व छात्र राजेश डिंडोर जो वर्तमान में अन्य विद्यालय में कक्षा 12 का छात्र है आया और मुझसे कहा कि सर कोई किताब हो तो दीजिए आप हमसे कहते थे कि क्लास की किताबों के अलावा दूसरी पुस्तकों को पढ़ा कीजिये उस समय हमने ध्यान नहीं दिया पर अब लगता है हमें और भी कुछ पढ़ना चाहिए। राजेश की बातों से लगा कि चूंकि पढना और पढ़कर समझना पढने से ही आता है और पढने के लिये यदि पुस्तकें और अन्य संदर्भ नहीं होंगे तो स्कूली पाठ्यकम से शायद पढ़ना तो हो जायेगा लेकिन इसे व्यापक अर्थों में समझना संभव नहीं हो पाएगा।

इस सोच को लेकर जब गाँव के विकास भाई के पास गये तो उन्होंने तुरंत कहा सर आप मेरे घर पर किताबें रख दीजिये, बच्चे यहाँ आकर पढ़ लेंगे यह भी तय किया गया कि यह पुस्तकालय केवल बच्चों के लिये ही नहीं होगा अपितु गाँव के सारे लोगों के लिये होगा हम यहाँ अखबार भी मंगवायेंगे । इसके लिये एकलव्य फाउंडशेन से चर्चा की गई उनके द्वारा 70 पुस्तकें भेजी गई कुछ बाल साहित्य मेरे पास था इस प्रकार 150 पुस्तकों के साथ 09 अगस्त 2023 को श्री विकास डिंडोर के अधपके घर में जिसकी दीवारें ईटों से और फर्श गोबर से लिपा पुता था सामुदायिक पुस्तकालय सोपाडा नुं घेर की शुरूआत हुई। इस पुस्तकालय हेतु पुस्तकों के लिये लोगों से अपील की गई कि वे अपने घरों पर रखी हुई उन पुस्तकों को जो उपयोग में नहीं आ रही है उन्हें पुस्तकालय के लिये दे दें। इस प्रकार कुछ लोगों ने घर पर रखी पुस्तकें दी और कुछ ने खरीद कर । वर्तमान में इस पुस्तकालय में 900 पुस्तकें हैं जिनमें धार्मिक, बालसाहित्य, सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक साहित्य, अंग्रेजी एवं बागडी की पुस्तकें सम्मिलित हैं। प्रतिदिन 10 से 15 व्यक्ति सुबह नौ बजे से पहले अखबार पढने आते हैं और 60 से 70 बच्चे स्कूल समय के बाद पढने आते हैं। इस प्रकार यह पुस्तकालय पाठकों से समृद्ध होता जा रहा है। इस दौरान दो बार पढने की संस्कृति पर दो शिविर हो चुके हैं। जिसमें विभिन्न विशेषज्ञ आकर चर्चा करते । इस पुस्तकालय के संचालन हेतु बच्चों एवं ग्रामीणों की एक कमेटी बनाई गई है जो इस पुस्तकालय के संचालन में सहयोग करती है ।

बांसवाड़ा पत्रिका

मेदिया डिंडोर में उठी लैर, सालौ आपड़े सोपडा नूं घेर...

बांसवाड़ा भास्कर 05-09-2023

आदिवासी बच्चों के लिए मेदिया डिंडोर गांव में खोला पुस्तकालय

बांसवाड़ा भास्कर 04-01-2024

शिविर में बच्चों व ग्रामीणों ने पढ़कर समझने और लिखने के तरीके सीखे

नौनिहालों और ग्रामीणों को भाया सोपड़ा नूं घेर

❖ पढ़ते हुए जो विचार या सवाल आ रहें है उन्हें यहाँ लिखें |

वीडियो लिंक - https://youtu.be/o_yj5C2LFQc?si=EUQz2Rvn7Nr65HBn

केस स्टडी : 3

सामान्य रूप से शिक्षण के लिए कक्षा कक्षीय गतिविधियों को ही उपयुक्त एवं सर्वोपरी माना जाता है इस मॉडल पुस्तकालय से पारिचित होने पर यह महसूस किया कि शिक्षक पुस्तकालयी गतिविधियों से कम ही परिचित होते हैं, वे पुस्तकालय को पुस्तक रखने एवं पुस्तकों के लेनदेन के कक्ष से अधिक नहीं समझते है | इसी भ्रांति को दूर करने के लिए श्रीमती बीना वर्मा से विभिन्न पुस्तकालय गतिविधियों की विस्तारपूर्वक जानकारी ली गई |

श्रीमती वर्मा के अनुसार विद्यार्थी के समग्र विकास विशेषकर पठन कौशल एवं अभिव्यक्ति के लिए पुस्तकालय का महत्व अधिकतम होता है | वह अपने विद्यालय में अध्यापकों के सहयोग से विभिन्न पुस्तकालय गतिविधियों का आयोजन करवाती है जिससे विद्यार्थियों के पठन कौशल के विकास के साथ-साथ उनकी अभिव्यक्ति का भी विकास हुआ है |

उनके अनुसार पुस्तकालय से संबंधित निम्न गतिविधियों का आयोजन उनके विद्यालय में करवाया जाता है -

- जोड़ी में पठन
- थीम डिस्प्ले
- पिक्सनरी गतिविधि
- कहानी वाचन
- पुस्तक चर्चा (Book Talk)
- चित्र बनाना
- नाटक
- कविता वाचन
- जोर से पढ़ना
- स्वतंत्र पठन
- विभिन्न प्रतियोगिताएं
- पुस्तकों का इलाज

इन सभी गतिविधियों की वीडियो एवं फोटोग्राफ श्रीमती बीना वर्मा द्वारा प्रदर्शित किए गए एवं उनके द्वारा इसकी विस्तृत जानकारी भी दी गई, इसके अलावा वह स्वयं विद्यार्थियों को पुस्तकालय से जोड़ने के लिए अपने संपूर्ण कालांश पुस्तकालय में ही लेती है, जिससे विद्यार्थीयों में पुस्तकालय के प्रति रुचि बढ़े और विद्यार्थी अधिक से अधिक पुस्तक पढ़ने लगे | उनके अनुसार इस आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के काल में पुस्तकों का महत्व बनाए रखने के लिए वह लगातार प्रयासरत है उन्होंने अपने इस पुस्तकालय में विषय वस्तु की पुस्तकों के अलावा कहानी, नाटक, पत्रलेखन, कविता, गतिविधि आधारित, चित्र कथाएं, लोक कथाएं, वर्ग पहेली एवं द्विभाषी पुस्तकों का संग्रह किया है जो अद्भुत है | इस मॉडल पुस्तकालय के संचालन के लिए नवंबर 2022 में उन्होंने पुस्तकालय बाल प्रबंधन समिति का गठन किया जिसकी मासिक बैठक का आयोजन किया जाता है एवं इसके सदस्य कक्षा एक से पांच तक के तीन-तीन बच्चे एवं 6 से 12 तक की कक्षाओं के दो-दो बच्चे हैं साथ ही इस प्रबंध समिति के अध्यक्ष प्रधानाचार्य एवं सचिव स्वयं पुस्तकालय अध्यक्ष है | इस पुस्तकालय की लोकप्रियता जानने के पश्चात् तत्कालीन राजस्थान माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री गौरव अग्रवाल

द्वारा इसका अवलोकन किया गया एवं समय-समय पर विभिन्न अधिकारी एवं पुस्तकालय अध्यक्ष भी इस पुस्तकालय का अवलोकन करते है |

❖ आपके अनुसार पुस्तकालय विद्यार्थियों के समग्र विकास में किस प्रकार सहायक है ?

❖ आपके अनुसार पुस्तकालय संवर्धन के लिए कौनसे महत्वपूर्ण कदम उठाये जाने चाहिए ?

वीडियो लिंक - https://www.youtube.com/watch?v=WhLG6or9xvo

- https://www.youtube.com/watch?v=e726XbrGrRI

-

-

डॉ धीरेन्द्र कुमार रांकावत
व्याख्याता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट)
कुचामन सिटी